रिकार्ड–तकदीर जगाकर आई.....ओमशांति प्रातःक्लास 12.1.67
यह तुम बच्चे तकदीर बना रहे हो।गीता में श्रीकृष्ण का नाम दे दिया है और कहते हैं भगवानोवाच्य मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ।अब कृष्ण भगवानोवाच्य तो है नहीं।यह श्रीकृष्ण की एम ऑब्जेक्ट है।फिर है शिव भगवान ही वाच्य के मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ।तो पहले जरूर प्रिंस कृष्ण बनेंगे।बाकी कृष्ण भगवानोवाच्य है नहीं।कृष्ण तुम बच्चों की एम ऑब्जेक्ट है।यह पाठशाला है।भगवान पढ़ाते हैं।तुम सबकी प्रिंस–प्रिंसेज बनने की एम ऑब्जेक्ट है।मनुष्यों ने फिर कृष्ण भगवान को भूलकर कृष्ण का नाम लगा दिया है।कृष्ण ने जो अपना पद गंवाया है वो (इस) राजयोग से पाया है।बाप कहते हैं बहुत जन्मों के भी अंत में मैं तुमको यह ज्ञान सुनाता हूँ फिर से सो कृष्ण बनाने लिए।तो मनुष्यों को भी भूल बतानी है।कृष्ण तो एम आब्जेक्ट है।इस पाठशाला का टीचर कृष्ण नहीं हैं।इस पाठशाला का टीचर श्री2 शिवबाबा है जो देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं ;परंतु प्रिंस तो बहुत बनने हैं ना।जबकि है ही राजयोग।बेगर टू प्रिंस।बाप बैठ समझाते हैं कृष्ण के बहुत जन्मों के भी अंत के जन्म में आकर जो पतित बन गया है उनको पावन बनाता हूँ।तुम भी कहते हो हम आये हैं तकदीर बनाने।आत्मा जानती है हम परमपिता परमात्मा से अब तकदीर बनाने आये हैं।यह है प्रिंस प्रिंसेज बनने की तकदीर।राजयोग है ना।शिवबाबा द्वारा पहले2 स्वर्ग के (दो पत्ते) कृष्ण और राधा निकलते हैं।यह जो पत्ते बनाये हैं ठीक हैं।समझाने लिए अच्छे हैं।गीता के ज्ञान से ही तुम तकदीर बनाते हो।तकदीर थी सो फिर फूट गई।बहुत जन्मों के अंत में तुम बिल्कुल तमोप्रधान ,बेगर बन गये।अब फिर प्रिंस बनना है।एम ऑब्जेक्ट ही है राजयोग।फिर चाहे ल.ना. को दिखाओ या कृष्ण राधा को।पहले तो जरूर राधा कृष्ण ही बनेंगे।फिर इनकी भी राजधानी चलती है।सिर्फ एक ही तो नहीं होंगे ना।स्वयंवर बाद राधा कृष्ण सो फिर ल.ना. बनते हैं।नर से प्रिंस वा नर से नारायण बनना बात एक ही है।है छोटी सी भूल।उसमें ही सारा (घोटाला) हो गया है।कहां परमपिता परमात्मा की बायोग्राफी ,कहां श्रीकृष्ण की बायोग्राफी।वो बिल्कुल ही पुनर्जन्मरहित।वो पूरे 84जन्म लेते हैं।एज (आयु) तो शुरू से ही लेकर मिलेंगे ना।25–30वर्ष बाद शादी होती होगी।तो यह पत्ते पर दिखाना ठीक है।समझाने के लिए अच्छा है।तो यह भी तुमको समझाना है कि यह गीता पाठशाला है।दूसरी कोई चीज़ नहीं है।भगवान बैठ राजयोग सिखाते हैं जिसका नाम गीता रख दिया है।कोई भी धर्म स्थापन होता है तो धर्म शास्त्र जरूर चाहिए ना।भक्तिमार्ग में सबके धर्म शास्त्र हैं।तुम बच्चे जानते हो यह ल.ना.स्वर्ग के मालिक थे।जरूर संगमयुग पर ही स्थापन हुआ होगा।इसलिए संगमयुग पुरुषोत्तमयुग कहा जाता है।आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना होती है।बाकी और सब धर्म विदा हो जाते हैं।लिखा हुआ भी है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना ,शंकर द्वारा विनाश कराते हैं।सतयुग में बरोबर एक ही धर्म था।वो हिस्ट्री, जॉग्राफी भी जरूर रिपीट होनी है।अच्छी चीज के ही लिए कहा जाता है स्वर्ग की स्थापना होगी जिसमें ल.ना. का राज्य होगा।गाते भी हैं जमुना के कंठे पर राज्य था।परिस्तान था।अभी तो कब्रिस्तान है।सभी कामचिता पर बैठ भस्म हो जावेंगे।कहते भी हैं यह कब्रदाखिल हुआ।समाधी आदि भी बनाते हैं ना।जैसे कब्र बनाते हैं वैसे ही समाधी कोई किस प्रकार की बनाते हैं,कोई किस प्रकार की बनाते हैं।मुसलमानों की मस्जिदें भी अनेक प्रकार की होती हैं।छोटी2 समाधियां बना देते हैं।यह सब कब्रें ,समाधियां, मस्जिदें आदि फिर बनी होंगी।फिर यह तब बनेंगी जब इनका राज्य होगा।सतयुग में भी फिर से तुम बनावेंगे।ऐसे नहीं कि कोई नीचे से सोने की द्वारका या लंका निकल आवेगी।द्वारका हो सकती है।लंका तो नहीं होगी।गोल्डन एज कहा जाता है रामराज्य को।सच्चा सोना जो था वो तो सब वो लूट गये।तुम समझाते हो भारत कितना धनवान था।अब तुम कंगाल हो।कंगाल अक्षर लिखना कोई बड़ी बात नहीं है।यह तो कोई2 मगजखोर होते हैं जो कहते हैं।तुम समझा सकते हो सतयुग में एक ही धर्म था।वहां और कोई धर्म हो नहीं सकता है।कई कहते हैं यह कैसे हो सकता है?क्या कोई सिर्फ देवतायें

ही होंगे।अनेक मत मतांतर हैं ना।एक की मत नहीं मिलती दूसरे से।कितना बड़ा ड्रामा है।कितने एक्टर्स हैं।यह सारा बुद्धि में चक्र लगाना चाहिए।खुशी रहनी चाहिए।तुम्हारा एम ऑब्जेक्ट तो उंचा है ना।हम मनुष्य से देवता वा स्वर्गवासी बनते हैं।यह भी सिर्फ तुम ब्राह्मण ही जानते हो कि स्वर्ग की स्थापना हो रही है।यह भी सदैव याद रहे तो हर्षितमुख अवस्था रहे ;परंतु माया घड़ी2 भुला देती है।तकदीर नहीं है तो सुधरते ही नहीं हैं।झूठ बोलने की आदत आधा कल्प से पड़ी हुई है।वो निकलती ही नहीं है।झूठ को भी खजाना समझकर रखा है।तो समझा जाता है इनकी तकदीर ऐसी है।बाप को याद ही नहीं करते हैं।याद भी तब रहे जबकि सारा ममत्व निकल जाये।सारी दुनियां से वैराग हो।मित्र–सम्बंधी आदि को जैसे देखते हुये भी देखते नहीं हैं।जानते हो यह सब नर्कवासी कब्रिस्तानी हैं।यह सब खतम हो जाने हैं।इसलिए शांतिधाम ,सुखधाम को ही याद करते हैं।हम कल स्वर्गवासी थे।राज्य करते थे।वो गुमा लिया है।फिर हम राज्य पाते हैं।कहते भी हैं ब्रह्मा का दिन और रात ;परंतु इसका ज्ञान विद्वान आदि में भी कुछ नहीं है।शास्त्र भी कितने ढेर पढ़ते रहते हैं।एक चंद्रकांत का भी नाम वेदांत रख दिया है।इसमें है सारी कहानी बटुक की।बटुक बच्चे को कहा जाता है।कृष्ण तो .....नहीं है।वो तो कितना बड़ा श्रीनारायण बना है।बच्चे अभी समझते हैं भक्तिमार्ग में कितना भटकना, पैसे बरबाद करना होता है।चलाते ही रहते हैं।मिलता कुछ भी नहीं है।आत्मा पुकारती है बाबा आओ ,सुखधाम ले चलो।सो भी अंत में जब बहुत दुःख होता है तब याद करती हैं।तुम देखते हो अभी यह पुरानी दुनियां खतम होनी है।अभी हमारा यह अंतिम जन्म है।इसी में हमको सारी नालेज मिली है।नालेज पूरी धारण करनी है।अधूरी भी बहुतों की आयु जावेगी।अर्थक्वेक आदि अचानक होते हैं ना।पाकिस्तान के पार्टीशन में कितने करोड़ों मरे होंगे।तुम बच्चों को शुरू से लेकर अंत तक मालूम पड़ा है।बाकी भी जो रहा हुआ होगा वो मालूम पड़ जावेगा।सिर्फ ये सोमनाथ का मंदिर तो सोने आदि का नहीं होगा ना।और भी बहुतों के महल ,मंदिर आदि होंगे ना सोने के।फिर क्या होता है?कहां गुम हो जाता है?निकलता ही नहीं है।अंदर सड़ जाता है।क्या होता है?आगे चलकर तुमको पता पड़ता जावेगा।कहते हैं सोने की द्वारका ,लंका नीचे चली गई।अब तुम कहेंगे ड्रामा में वो नीचे चली गई।फिर चक्र फिरेगा तो उपर आवेगी।सो भी फिर से बनेंगे ना।यह चक्र बुद्धि में स्मरण करते बड़ी खुशी रहनी चाहिए।यह चित्र तो पॉकेट में रख देना चाहिए।यह बहुत सर्विस (मेडल) लायक है ;परंतु इतनी सर्विस कोई करते नहीं हैं।ट्रेन में भी बहुत सर्विस कर सकते हैं ;परंतु कोई भी समाचार लिखते नहीं हैं कि ट्रेन में क्या सर्विस की।थर्ड क्लास में भी सर्विस बहुत अच्छी हो सकती है।जिन्होंने कल्प पहले समझा है जो मनुष्य से देवता बने होंगे वो ही समझेंगे।मनुष्य से देवता गाया जाता है।ऐसे नहीं कहेंगे कि मनुष्य से क्रिश्चियन वा मनुष्य से सिक्ख।नहीं वो तो सब खतम हो जाना है।मनुष्य से देवता बने अर्थात् आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना होना।बाकी सब अपने2 धर्म में चले गये।झाड़ में दिखाया जाता है फलाने2 धर्म फिर कब स्थापन होंगे।देवतायें हिंदु बन गये हैं।हिंदु से फिर और2 धर्म में कन्वर्ट हो गये हैं।वो भी बहुत ही निकलेंगे।जो अपने श्रेष्ट धर्म, श्रेष्ठ कर्म को छोड़कर थर्ड क्लास में जाकर प्रवेश हुये हैं वो भी निकल पड़ेंगे।पीछे थोड़ा समझेंगे प्रजा में आ जावेंगे।देवी देवता धर्म में सब थोड़े ही आवेंगे।सब अपने2 सेक्शन में चले जावेंगे।तुम्हारी बुद्धि में यह सब बातें हैं।दुनियां में क्या2 करते रहते हैं।अनाज के लिए कितना (फकर) रखते हैं।बड़ी2 मशीन्स लगाते हैं।होता कुछ भी नहीं है।श्रेष्ठ को तमोप्रधान बनना ही है।सीढ़ी नीचे उतरनी ही है।ड्रामा में भी नूंध है।वो होता ही रहता है।फिर नई दुनियां की स्थापना भी (होनी) ही है।साधारण प्रजा भी तो बननी है ना।मकान आदि साधारण मनुष्य ही बनाते हैं ना।राजा बनने वाले तो मकान बनाने की इन्वेंशन नहीं करेंगे ना।यह फिर इनका पार्ट है।साइंस जो अभी सीख रहे हैं 9वर्ष में बहुत होशियार हो जावेंगे।जिससे फिर वहां बहुत अच्छी2 चीजें बनेंगी।यह साइंस वहां सुख देने

वाली हो जावेगी।यहां तो सुख थोड़ा है।दुःख बहुत है।इस साइंस को निकले 50–60वर्ष हुआ है।आगे तो फोन,बिजली ,गैस आदि कुछ भी नहीं था।50–60वर्ष में क्या हो गया है?वहां तो फिर सीखे,सिखाये चलेंगे।जल्दी2 काम होता जावेगा।यहां भी देखो मकान कैसे बनते हैं।सब कुछ रेडी रहता है।कितनी मारियां बनाते हैं।वहां तो ऐसे नहीं होगा।वहां तो सबको अपनी2 खेती–बाड़ी होती है।टैक्स आदि कुछ नहीं पड़ेगा।वहां तो बेशुमार धन होता है।जमीन भी ढेर होती है।नदियां तो सब होंगी।बाकी नाले नहीं होंगे जो बाद में खोदे जाते हैं।तो बच्चों को अंदर में कितना खुश रहना चाहिए।हमको डबल इंजन मिला हुआ है।पहाड़ों पर ट्रेन को डबल इंजन मिलता है।तुम बच्चे भी उंगली देते हो ना।तुम हो कितने थोड़े।तुम्हारी महिमा भी गाई हुई है।तुम जानते हो हम बाबा के खिदमतगार हैं।खिदमत कर रहे हैं।बाबा भी खिदमत करने आते हैं।एक धर्म की स्थापना अनेक धर्मों का विनाश करवा देते हैं।थोड़ा आगे चलकर देखेंगे कि बहुत हंगामें होंगे।अभी भी डर रहता है कि कहीं लड़ाई का बॉम्ब्स ना गिरा देवों ;परंतु नहीं, विवके कहते हैं कि अभी देर है।चिंगारी तो बहुत लगती रहती है।घर2 में आपस में लड़ते रहते हैं।बच्चे जानते हैं पुरानी दुनियां खतम हो जानी है।फिर हम अपने घर चले जावेंगे।अभी 8 का चक्र पूरा हुआ है।दसवें इकट्ठे चले जावेंगे।तुम्हारे में भी यह थोड़े हैं जिनको घड़ी2 याद पड़ता है।समझा जाता है अभी स्थापना में देरी है।ड्रामाअनुसार कोई चुस्त हैं ,कोई सुस्त हैं।यह तो होता ही है।चुस्त स्टुडेंट्स अच्छी मार्क्स से पास हो जावेंगे।सुस्त जो होंगे उनका तो सारा दिन लड़ना–झगड़ना ही लगा रहता है।बाप को याद ही नहीं करते हैं।सारा दिन मित्र–सम्बंधी ही बहुत याद आते रहते हैं।यहां तो सब कुछ भी भूल जाना होता है।हम आत्मा हैं।यह शरीर रूपी दुम्भ लटका हुआ है।हम कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे।फिर यह दुम्भ छूट जावेगा।यह फिकर है कर्मातीत अवस्था हो जावे तो यह शरीर खतम हो जावे।हम श्याम से सुंदर बन जावें।मेहनत तो करनी है ना।प्रदर्शनी में भी देखो कितनी मेहनत करते हैं।महेंद्र ने कितनी हिम्मत दिखाई है।अकेले कितनी हिम्मत से प्रदर्शनी की है।मेहनत का फल भी तो मिलेगा ना।एक ने कितनी कमाल की है।कितनों का कल्याण किया है।मित्र,सम्बंधियों आदि की मदद से ही इतना काम किया है।कमाल ही है।ऐसे कोई ने काम किया ना होगा।मित्र,सम्बंधियों आदि को समझाते रहते हैं यह पैसे आदि इस काम में लगा दो।रखकर क्या करोगे?सब लिखते हैं बाबा कमाल की है।सैंटर भी खोला है अपनी हिम्मत से।कितनों का भविष्य बनाया है।ऐसे 5–7 निकलें तो कितनी सर्विस हो जावे।कोई2 तो बहुत मनहूस होते हैं।फिर समझा जाता है इनकी तकदीर में ही नहीं है।समझते नहीं विनाश सामने खड़ा है।कुछ तो कर लेंगे।अभी मनुष्य जो दान करेंगे ईश्वर अर्थ कुछ भी मिलेगा नहीं।ईश्वर तो अभी आया हुआ है स्वर्ग की बादशाही देने लिए।इन दान–पुण्य करने वालों को कुछ भी मिलेगा नहीं।ड्रामाअनुसार जिन्होंने अपना तन,मन,धन सफल किया था वो ही कर रहे हैं।तकदीर में नहीं है तो समझते भी नहीं हैं।तुम जानते हो वो भी ब्राह्मण हैं ,हम भी ब्राह्मण हैं।प्रजापिता ब्रह्माकुमार कुमारियां इतने ढेर ब्राह्मण हैं।वो हैं कुखवंशावली।तुम हो मुखवंशावली।यह जो कहते हो फलाना स्वर्गवासी हुआ या ज्योति ज्योत समाया ;परंतु तुम समझते हो कोई भी .....नहीं सकते हैं।यह है ही हेल।नर्क।तो पुनर्जन्म भी जरूर नर्क में ही लेना है।शिवबाबा आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं।शिवजयंती भी संगम पर ही होती है।अब स्वर्ग में जाने लिए बाप का मंत्र मिलता है मनमनाभव।मुझे याद करो तो तुम पवित्र बनकर पवित्र दुनिया का मालिक बन जावेंगे।ऐसे युक्ति से (पर्चे) छपाने चाहिए।दुनियां में मरते तो बहुत ही हैं।कहीं भी कोई मरते हैं तो वहां पर जाकर बांटने चाहिए।बाप खुद आते हैं तब ही पुरानी दुनियां का विनाश होता है और उसके बाद स्वर्ग के द्वार खुलते हैं।5000वर्ष पहले भी भारत सुखधाम था।बाकी सब शांतिधाम में थे।स्वर्ग सतयुग को कहा जाता है।अच्छा